पाठशाला का उद्देश्य
पाठशाला के अध्यापक की विशेषताऐं
वर्तमान समय अनुसार किस पद्धति से बच्चों को पढ़ाया जाये?
पाठशाला का उद्देश्य → जैन धर्म एक धर्म है जाति है जिसमें महावीर भगवान ने जियो और जीने दो के संस्कार दिये है। जिसमें एक इन्द्रिय जीव की भी रक्षा करने का उपाय बताया है जबकि अन्य धर्मों में एकेन्द्रिय जीव की हिंसा को हिंसा ही नहीं मानते जबकि वर्तमान में 189 देश इसी एकेन्द्रिय जीव Covid 19 (कोरोना) वायरस से त्रस्त है जिसने 189 देशों के मनुष्यों को कैद कर दिया और कितनी शक्ति होती है एकेन्द्रिय जीव में। जैन पाठशाला का विद्यार्थी एकेन्द्रिय से लेकर पंचइन्द्रिय जीवों की रक्षा का ज्ञान होता है तथा आज के ~~भौतिक~~ वैज्ञानिक युग में जैन धर्म को पीछे मानते है जबकि जैन भूगोल और वैज्ञानिक दृष्टि से जैन सिद्धान्तों का कोई काट्य नहीं है। जैन धर्म के अनुसार जम्बूद्वीप में दो सूर्य और दो चन्द्रमा है जबकि वैज्ञानिक एक सूर्य और एक चन्द्रमा कहते है इसी प्रकार एक बूंद में असंख्यात जीव है परन्तु वैज्ञानिक 36450 जीव बताता है
जैसे भव्य महल अच्छा है पर नींव कमजोर है तो वह महल हवा, बाढ़ आदि में ढह जायेगा यदि नींव मजबूत है तो उसे कोई हवा, बाढ़ हिला नहीं पायेगी वर्तमान परिवेश में बच्चों को जिन स्कूलों में हम शिक्षा दिलवाते है उनमें आज यहाँ तक की अण्डा को भी शाकाहारी बताने का प्रयास किया जाता है तथा पश्चात्य संस्कृति की ओर अग्रसर करते है तथा जैन धर्म के अनुसार चलने वाले को पिछले जमाने का बताते है।

प्रस्तावना → वर्तमान समय में बच्चे जैन धर्म के संस्कारों को नहीं जानते तथा उनको हम उच्च शिक्षा के नाम पर English medium के स्कूलों में पढ़ना चाहते है जिसमें उनको धार्मिक संस्कार तो आते ही नहीं है और पाश्चात्य संस्कार आते है। बच्चों को बचपन ही जैन संस्कार देना चाहिए जिससे बच्चे में जैन सिद्धान्तों को दृढ़ता से पालन करें क्यों कि जैन धर्म में जिस हिंसादि पापों की परिभाषा दी है वे केवल जैन पाठशाला में ही बच्चों को मिल सकती है न कि स्कूल कालेजों में क्योंकि अन्य मतों में जिसको धर्म माना जाता है वहा, जैन धर्म के अनुसार पाप ही है जैसे अन्यमतों में उपवास में आलू फलाहार है, रात्रिभोजन सूर्योदय से पूर्व भोजन करना आदि जबकि जैन धर्म के अनुसार सभी कन्द चीजों में एक सुई के नोक बराबर में अनंतजीव रहते है। रात्रिभोजनत्याग करने से अनंतजीवों की रक्षा होती है।

बच्चों को बचपन से ही जैन धर्म के संस्कार ~~बचपन~~ देना चाहिए क्योंकि जब मिट्टी गीली होती है जैसा चाहे वैसा उसको बनालो बाद में जब मिट्टी सूख जाये तो वह मुड़ती नहीं परन्तु टूट जाती है। इसी प्रकार प्रथमानुयोग के शास्त्रों से जिन साधियों में बचपन से संस्कार थे उन्होंने ही जैन धर्म की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुती दी परन्तु धर्म पर आँच नहीं आने दी।

उदाहरण के लिए चन्दनबाला बाजार में बेची गई परन्तु अपने धर्म से नहीं डिगी।

सेठ सुदर्शन को फांसी की सजा तक मिली परन्तु धर्म से च्युत नहीं हुए ऐसे हजारो उदाहरण है परन्तु वे धर्म के लिए मर गये परन्तु धर्म से च्युत नहीं हुए।

Scanned with CamScanner

~~वर्तमान समय~~ पाठशाला के अध्यापक की विशेषताएं ->

(1) वर्तमान समय के अध्यापक को WhatsApp facebook आदि का ज्ञान होना चाहिए और इनके द्वारा बच्चों को संस्कारित कर सकें

(2) अध्यापक को तीन लोक का ज्ञान होना चाहिए कि वर्तमान में वैज्ञानिक चन्द्रमा पर और मंगलग्रह पर जीवन ढूंढ रहे हैं जबकि ये न चन्द्रमा पर न मंगल ग्रह पर बल्कि विजयार्द्ध पर्वत पर ही पहुंचकर चन्द्रमा पर पहुंचना मानते हैं।

(3) सूर्य चन्द्रमा तारे नक्षत्र प्रकीर्णक की दूरियों का ज्ञान होना चाहिए। जिससे बच्चों को समझाने में आसानी हो।

(4) 2 महायोजन के संसार को ही ये पृथ्वी मान रहे हैं जबकि जैन असंख्यात द्वीप समुद्रों का वर्णन करने वाला है।

(5) मंदिर बनवाने के साथ पुजारी भी तैयार करना चाहिए नहीं तो मंदिर सूने हो जायेंगे। तथा पानी पीयो छानकर

(6) दारु पीयो छानकर ये स्थिति बन जायेगी

वर्तमान समय में बच्चों को ये शिक्षा देनी चाहिए कि ये शाकाहारी या मांसाहारी क्योंकि वर्तमान समय के पैकिंग आइटमों में मांसाहारी पदार्थ मिले आते है और बच्चों को इनका ज्ञान ही नहीं होता।

Scanned with CamScanner

अध्यापक की विशेषताए → ~~जैसा~~ वर्तमान समय में बच्चों को आधुनिक चीजो के द्वारा संस्कार दिये जा सकते है। इसीलिए अध्यापक में निम्न योग्ताऐं होनी चाहिए ?

1. आज के दौर के अनुसार face book, whattsapp आदि का ज्ञान होना चाहिए जिससे बच्चों को इनके द्वारा भी जैन संस्कार दिये जा सके।

Scanned with CamScanner

(2) अध्यापक को चारो अनुयोगो का ज्ञान होना चाहिए जिससे बच्चो को हर क्षेत्र का ज्ञान हो सके

(3) अध्यापक स्वयं जैन सिद्धान्तो का पालन करने वाला होना चाहिए जैसे पाठशाला में अध्यापक कहे रात्रि भोजन त्याग करें और स्वयं अध्यापक रात्रि में शादी पार्टी में खाते नजर आये।

(4) अध्यापक को पक्षपाती नहीं होना चाहिए जिस प्रकार भी हो अध्यापक को सही निर्णय लेकर उचित पुरस्कार दे बच्चो के साथ पक्षपात करके निर्णय नहीं करना चाहिए?

(5) ~~अध्यापक को~~

वर्तमान समय अनुसार किस प्रकार बच्चो पढ़ाया जाये -

आज बच्चे जब ~~[illegible]~~ माह के होते है तो माता-पिता बच्चो को mobile दे देते है और उन पर कोई भी नाटक, ट्यून इत्यादि लगाकर अपने कार्य में लग जाते है अतः बालक बचपन से ही Mobile का आदि हो जाता है और वह मोबाइल से ही खेलता रहता है जैसे-२ बड़ा होता है वह मोबाइल में ही अधिक कार्य करना सीखता है और मोबाइल से ही गेम इत्यादि खेलता है अतः वर्तमान समय में बच्चों को यूट्यूब whatsapp, gmail, twitter आदि के द्वारा ही हर प्रकार की शिक्षा मिल रही है इसीप्रकार इन सभी पर जैन सिद्धान्तो के अनुसार कहानिया, प्रवचन आदि सिखा सकते है।

वर्तमान समय में चारो अनुयोगो के अनुसार बच्चो के हिसाब से बड़ो के हिसाब से इस प्रकार से कैसेट, यूट्यूब चैनल, whatsapp facebook आदि द्वारा ही शिक्षा दी जा सकती है तथा बच्चो को पाठशाला में विविध विषय की शिक्षा के अनुसार T.V. स्क्रीन पर चित्रादि के द्वारा facebook, यूट्यूब आदि के माध्यम से उच्च शिक्षित पंडितो के प्रवचन तीनलोक का वर्णन, 163 पुराण पुरुषो का जीवन चारित्र सतियो का जीवन चारित्र आदि के द्वारा बच्चो को शिक्षित किया जाना चाहिए जब जिस बच्चे को जिस क्षेत्र में जिज्ञासा हो जैसे करणानुयोग पर जिज्ञासा है कि मेरु कैसे होते है समुद्र नदिया का वर्णन कैसा है और तो श्रीसंजीव गोदाजी ने समझाया वो यूट्यूब पर उनकी V.D.O. डली है इसी प्रकार प्रथमानुयोग

चरणानुयोग एवं द्रव्यानुयोग के शास्त्रों के भी P.D.F.
upload करनी चाहिए जिससे बच्चों को जिस विषयान्तर्गत
रुचि हो उस प्रका अनुसार अपनी जिज्ञासा शान्त करने के
लिए जिस प्रकार google पर सर्च करने पर मिल जाते है उसी
प्रकार जैन सिद्धान्तों के, जैन शास्त्रों के उत्तर भी मिल जाना
चाहिए।
बच्चे यदि पाठशाला नहीं आ रहे तो Zoom conference चल रही है
तो निश्चित सकयापा बच्चो zoom meeting के द्वारा बच्चों को पाठशाला
पढ़ाए।

Scanned with CamScanner

(3) (1) वर्तमान समय में बच्चों को जैन संस्कृति तथा जैन सिद्धान्तो से अवगत कराना चाहिए

(2) बच्चों को प्रथमानुयोग का ज्ञान भी कराना चाहिए जिससे बच्चों में वर्तमान समय की आई विपत्ति से न घबराए जैसे आदिनाथ (मुनिराज) को छै: माह तक भोजन के लिए ही नहीं गये और छै: माह तक आहार न मिला। फिर भी न घबराए रामचन्द्र को 14 वर्ष वनवास मिला

Scanned with CamScanner

परन्तु न घबराए उनको फल और नदियो का पानी पीकर भोजन पानी किया परन्तु वर्तमान समय मे शादिक के घरवास " मे (लोकडाउन) मे घर मे दाल रोटी चावल और न जाने क्या-२ पकवान खाने मिल रहे है फिर भी पुलिस वालो के डंडे खाने रोड पर जा रहे है। तथा किस प्रकार स्त्रियों ने अपने शील रक्षा के लिए अपने प्राणो को उत्सर्ग किया पर शीलभंग नही होने दिया इसी प्रकार चारो ही अनुयोगो का ज्ञान कराना चाहिए जिससे वर्तमान समय के अनुसार बच्चो को व्यवहारिक एवं धार्मिक संस्कारो के अनुसार समाज के वैज्ञानिक ज्ञान का विकास को देखकर विपरीत मार्ग को ग्रहण न करने लगे अतः बच्चो को वर्तमान समय मे whatsapp, facebook etc. के द्वारा आधुनिक साधनो के द्वारा जिस प्रकार भी बच्चो का मन पाठशाला मे लग सके उस प्रकार उनको पाठशाला मे शिक्षा देना चाहिए। बच्चो का मन बहुत चंचल होता है और आजकल पश्चात संस्कृति का बोलबाला है जिसमें T.V. का विशेष योगदान है बच्चों पर T.V. मे दिखाए जाने वाले सीरियलो के अनुसार आधुनिकता के नाम पर अश्लील वस्त्राभूषण आदि रात्रि भोजन, अण्डा को शाकाहारी आदि गलत कुप्रथाएं बच्चों को परोसी जाती है तथा स्कूलों मे भी लंच बाक्स मे गलत तथा मांसाहारी सामग्री बच्चों के दैनिक आहार मे होती जा रही है इसीलिए जैन धर्म की संस्कृति को बच्चो तक पहुचाने के लिए बच्चो मे जैन धर्म के संस्कार तब ही आ सकते है जब हम बच्चों को बचपन से ही पाठशाला भेजे तथा घर का वातावरण भी शुद्ध सात्विक रखे क्योकि थ्योरी की अपेक्षा प्रेक्टीकली जल्दी समझ मे आती है तथा माता-पिता

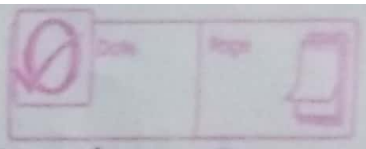

खुद खुद संस्कारी न हो और अपने बच्चों को संस्कारित करना चाहे तो बहुत मुश्किल से होता है पर असंभव नहीं है। इसीलिए बच्चों को बचपन से संस्कारित करें और प्रतिदिन पाठशाला अवश्य भेजें तथा शिक्षक भी प्रतिदिन बच्चों को पाठशाला पढ़ाए तथा शिक्षक भी यथायोग्य जैन नियमों का पालन करें न कि शिक्षक जमीकंद खाते हैं रात्रि भोजन करते हो मन में कुछ वचन में कुछ और क्रिया में कुछ हो तो ऐसे शिक्षकों को पाठशाला पढ़ाने की परमीशन नहीं होनी चाहिए क्योंकि इससे बच्चों पर मिश्रित प्रभाव पड़ेगा और बच्चे गलत रास्ते पर अग्रसर होंगे।

Scanned with CamScanner